# अपराधी - बच्चे या समाज?

अरविन्द गुप्ता

रूस के अंतोन मकरंको का नाम दुनिया के गिने-चुने शिक्षाविदों में से है। 1917 की अक्टूबर क्रांति और उसके बाद गृह-युद्ध में बहुत से रूसी नागरिक मारे गए। हजारों बच्चे बेघर हुए। चिथड़े पहने इन बच्चों को शहरों की झुग्गी-झोपड़ियों और गांवों में घूमते देखा जा सकता था। पेट भरने के लिए बच्चे भीख मांगते और चोरी करते। धीरे-धीरे बच्चे चक्कू-बाजी और कत्ल भी करने लगे। 1920 के अंत तक इस तरह के बाल-अपराधियों की संख्या दस लाख तक पहुंच गई थी।

अंतोन मकरंको (1988-1939) के पिता रूसी रेल्वे में पेंटर थे। मकरंको ने मात्र 17 साल की उम्र से ही रेलवे स्कूल में पढ़ाना शुरू कर दिया। बाद में उन्होंने कई वर्ष शिक्षा विभाग में नौकरी की। लेनिन की सरकार इन गरीब बच्चों की परवरिश के लिए कुछ करना चाहती थी। मकरंको ने इस चुनौती को स्वीकारा और अनाथ बच्चों के लिए गोर्की कालोनी (1920-28) की स्थापना की। कालोनी की नाम प्रसिद्ध रूसी लेखक मक्सिम गोर्की के नाम पर रखा गया। 1926 तक कालोनी में बच्चों की संख्या बढ़कर 400 तक पहुंच गई। बाद में मकरंको डेजरिंजकी कम्यून (1927-35) के निदेशक भी रहे।

मकरंको रूसी क्रांति से बेहद प्रभावित थे। रूस की कम्यूनिस्ट सरकार सामूहिक श्रम के आधार पर देश की पुन:रचना कर रही थी। मकरंको का मानना था कि लोगों की भौतिक परिस्थितियां ही उनकी चेतना को गढ़ती हैं। जिस प्रकार सामंती संबंधों, जारशाही, युद्ध ने अपराधी बच्चे पैदा किए। उसी प्रकार सहयोग, समता और विश्वास की बदली हुई सामाजिक परिस्थितियां एक 'नया मानव' पैदा कर सकती थीं।

कौन थे यह बच्चे? मकरंको पहली बार सत्रह वर्षीय नवयुवक सेमोन कालाबिन को जेल में मिले। अनेकों अपराधों के लिए उसे जेल भेजा गया था। जेल से निकलते ही मकरंको ने सेमोन को दो सौ रूबल दिए और उसे डबलरोटी, अंडे आदि सामान की एक सूची दी। 'तुम तुरंत घोड़ा-गाड़ी लेकर दुकान से यह सामान लेकर गोर्की कालोनी पहुंचो। हां देखो, दुकानदार बहुत चालाक है वो अक्सर कम तोलकर मुझे चूना लगाता है।' मकरंको ने उस घोर अपराधी पर कैसे यकीन किया? उसको सैकड़ो रूबल और घोड़ा-गाड़ी क्यों सौंपे? अगर वो उन्हें लेकर चंपत हो जाता, तो? लड़का भी मकरंको के इस असीम विश्वास पर अचंभित था। कुछ समय बाद सेमोन सामान लेकर गोर्की कालोनी पहुंचा। मकरंको ने डबल-रोटियां गिनीं तो तीन ज्यादा निकलीं (जिन्हे सेमोन चुरा लाया था)। मकरंको ने उन्हें तुरंत लौटाया। मकरंको के पास इसी प्रकार के तेज और शातिर बच्चे आते थे। पर उनकी जिंदगी सहयोग और सामूहिक श्रम से सदा के लिए बदल जाती थी। कुछ सालों बाद सेमोन गोर्की कालोनी में एक टीचर की हैसियत से पढ़ाने लगा।

मकरंको के 'विस्फोटक' तरीके से गरीब, अनाथ बच्चे बहुत लाभान्वित हुए। गोर्की कालोनी के कुछ बच्चे रात को रेलवे स्टेशन पर पहरा देते और जब ट्रेन रुकतीं तो वे उनमें अनाथ, बेघर बच्चों को तलाशते। ज्यादातर बच्चे या तो बर्थ के नीचे अथवा शौचालय में छिपे मिलते। सुबह-सुबह गोर्की कालोनी का बैंड इन बच्चों का स्वागत करने आ पहुंचता और उन्हें बहुत सम्मान के साथ कालोनी में लाया जाता। वहां पर नहा-धोने, साफ कपड़े पहनने के बाद प्रतीकात्मक रूप में उनके 'चिथड़े' कपड़ों की होली जला दी जाती। धीरे-धीरे नये बच्चे कालोनी के कठिन श्रम के अभ्यस्त हो जाते।

महात्मा गांधी जैसे ही मकरंको का कार्य-आधारित शिक्षा पर विश्वास था। कालोनी में बच्चे पांच घंटे स्कूल में पढ़ते और चार घंटे फार्म या फैक्ट्री में काम करते। अनुशासन के लिए बच्चों को सैनानियों की छोटी टोलियों में बांटा जाता। हरेक टोली में एक कमांडर होता जिसका काम बच्चों को स्वाभिमान और सामुदायिक भावनाओं से ओत-प्रोत करना था।

अनाथ बच्चों के बीच मकरंनो के काम को स्टालिन और रूस की खुफिया पुलिस (चेका) के चीफ डेरजिंस्की का सहयोग मिला। रूस के शिक्षाविदों ने मकरंको के काम का पुरजोर विरोध भी किया पर अमरीका के मशहूर शिक्षाविद् जॉन डयूई ने मकरंको के काम को भरपूर सराहा। धीरे-धीरे मकरंको का तरीका रूस की शासकीय शैक्षणिक पद्धति बन गई।

रूस के महान जनवादी लेखक मक्सिम गोर्की से प्रेरित होकर मकरंको ने अपने समृद्ध अनुभवों पर आधारित कई सुंदर पुस्तकें लिखीं। इन किताबों को बहुत सराहा गया और दुनिया की तमाम भाषाओं में उनका अनुवाद हुआ। गोर्की कालोनी के उनके अनुभवो पर आधारित पुस्तक 'रोड टू लॉइफ' का साठ से भी अधिक भाषाओं में अनुवाद हुआ। कुछ वर्ष पहले तक इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद 'जीवन की ओर' को बहुत सस्ती कीमत में खरीदा जा सकता था। रूस में इस पुस्तक की 25 लाख प्रतियां बिकीं और वो अब 85वें संस्कार में है। पर रूस के विखंडन के बाद अब यह किताबें लगभग लुप्त हो गई हैं। 'एक पुस्तक पिता माता-पिता के लिए' मकरंको की अन्य श्रेष्ठ पुस्तक है।

मकरंको बच्चों के मानस को गहराई से समझते थे। उनकी पद्धति द्वारा अनाथ, गरीब बच्चे अपने देश के कर्मठ और स्वाभिमानी नागरिक बने। गोर्की कालोनी लीडरशिप ट्रेनिंग का एक आर्दश केंद्र बनी। किसी बच्चे के लिए कालोनी से निकाला जाना सबसे बड़ी सजा थी।

मकरंको के प्रयोगों से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। सामाजिक परिस्थितियां ही लोगों को अपराधी बनाती हैं। और बदली हुई परिस्थितियां अपराधियों को एक अच्छे नागरिक में तब्दील कर सकती हैं।